छेछन

डोम लोकदेवताक बल आ प्रेमक वीरगाथा

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000)

ISSN 2229-547X

© Gajendra Thakur/ Preeti Thakur; गजेन्द्र ठाकुर सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) ISSN 2229-547X

ई पोथी गजेन्द्र ठाकुर समग्रक अन्तर्गत संकलित अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक ISBN:978-93-5890-210-5

DESIGNED BY: AUM GAJENDRA THAKUR

उपक्रम : बलगर छेछन महराज

डोम जातिक लोकदेवता छेछन महराज बड्ड बलगर छलाह — एकटा एहन वीर, जकर बल आ साहस मिथिलाक लोककथामे आइयो स्मरण कएल जाइत अछि।

ई गाथा शक्तिपरीक्षा, प्रेम-विजय, आ अन्ततः एकटा शक्तिशाली द्वन्द्वक थिक — जतय छेछन अपन बलपर एकटा जिद्दी सुग्गर आ मानिकचन्द नामक बलशाली डोम सरदारकेँ पराजित कऽ, प्रेम आ सम्मान दुनू प्राप्त केलनि।

अध्याय १ : सहिदापुरक चर्च

चित्र 1

छेछन महराजक संगी-साथी सभ एक दिन ओकरा एकटा रोमांचक खिस्सा सुनओलनि। जखन ओ सभ सहिदापुर गेल छला — बाँसक टोकरी आ पटिया बेचबाक लेल — तखन ओतुक्का डोम सरदार मानिक चन्दक वीरताक चर्च सुनलनि।

मानिकचन्द एकटा अखराहा बनओने छलाह, आ ओतय एकटा पैघ सन डंका राखल छल — चुनौतीक प्रतीक, वीरताक आह्वान।

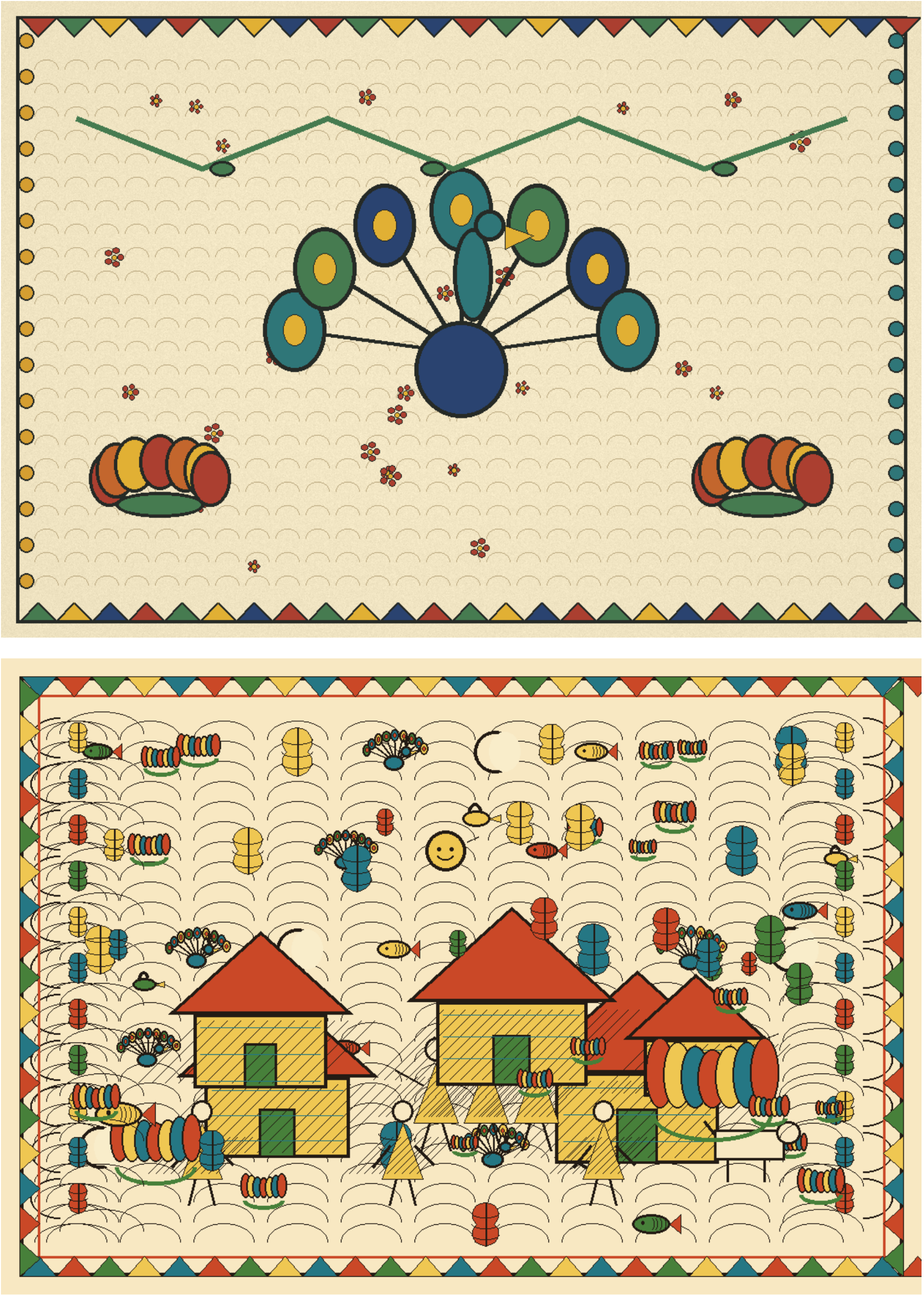

चित्र 2

जे किओ ओहि डंकापर चोट करैत छल, ओकरा मानिकचन्दक पोसुआ सुग्गर — जकर नाम चटिया छल — तकरासँ लड़ए पड़ैत छलैक! ई सुग्गर कोनो साधारण जानवर नहि, अत्यन्त शक्तिशाली आ भयंकर छल।

मानिकचन्द एकटा प्रण केने छलाह — जे किओ चटियासँ जीति जाएत, से मानिकचन्दसँ लड़बाक योग्य होएत, आ जे मानिकचन्दकेँ हराएत, से मानिकचन्दक बहिन पनमासँ विवाहक अधिकारी होएत! ई असाधारण शर्त एकटा दुर्लभ अवसर छल, मुदा आइ धरि कोनो व्यक्ति चटियाकेँ हराबएमे सक्षम नहि भेल छल।

अध्याय २ : चिलमक साहस

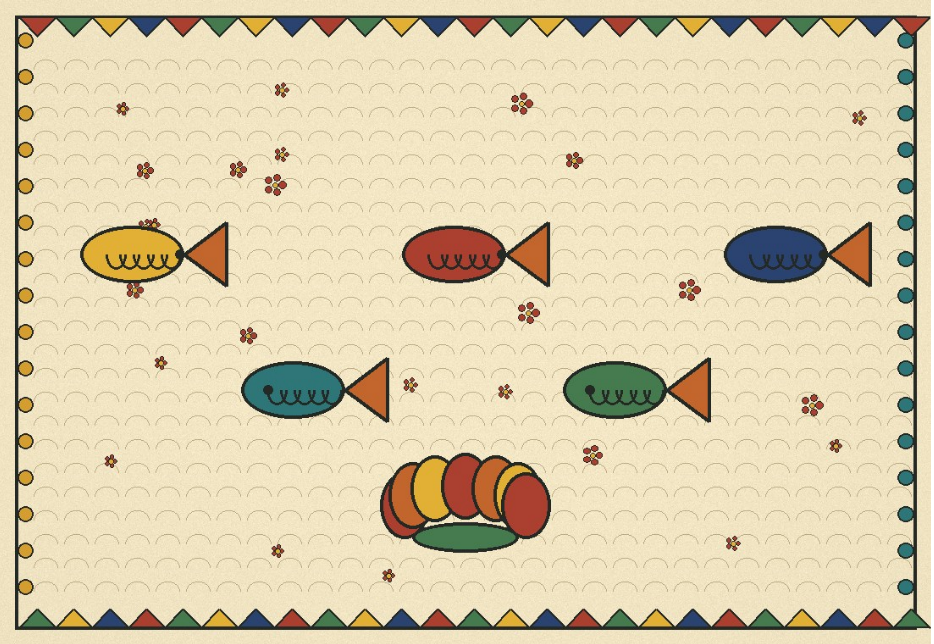

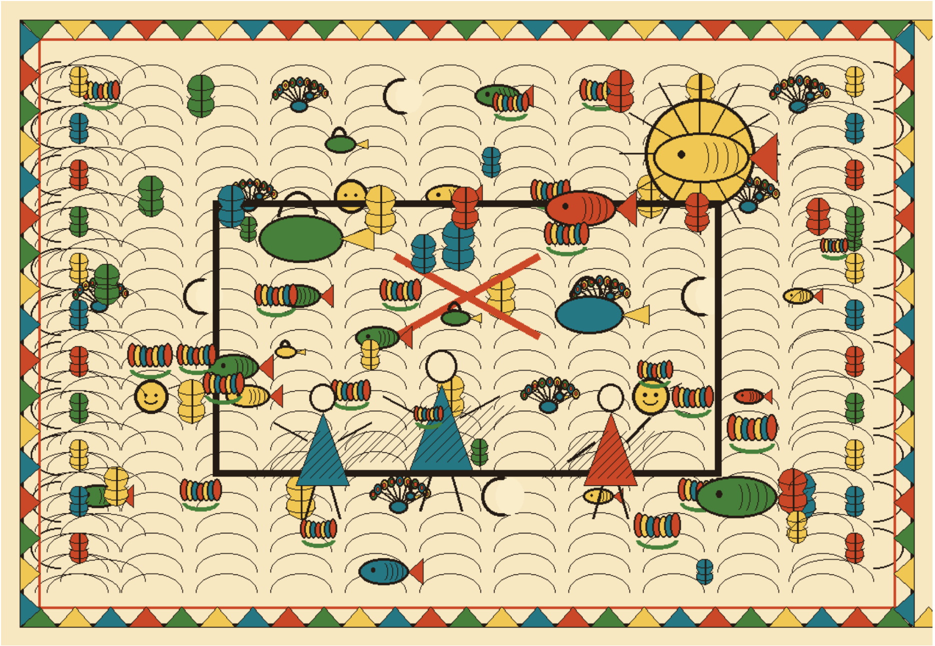

चित्र 3

दिन बितैत गेल, आ एक दिन छेछन महराज अपन पाँच पसेरीक भारी कत्ता लऽ सहिदापुर दिस बिदा भेला — ओहि चुनौतीपूर्ण डंकाक सामना करबाक लेल।

डंकापर चोट करबासँ पहिने, छेछन महराज एकटा अद्भुत तैयारी केलनि — ओ एकटा बुढ़ीसँ आगि माँगलनि, आ अपन चिलममे आगि आ विशेष पुष्प-पदार्थ मेदनीफूल भरि सभटा पीबि गेलाह!

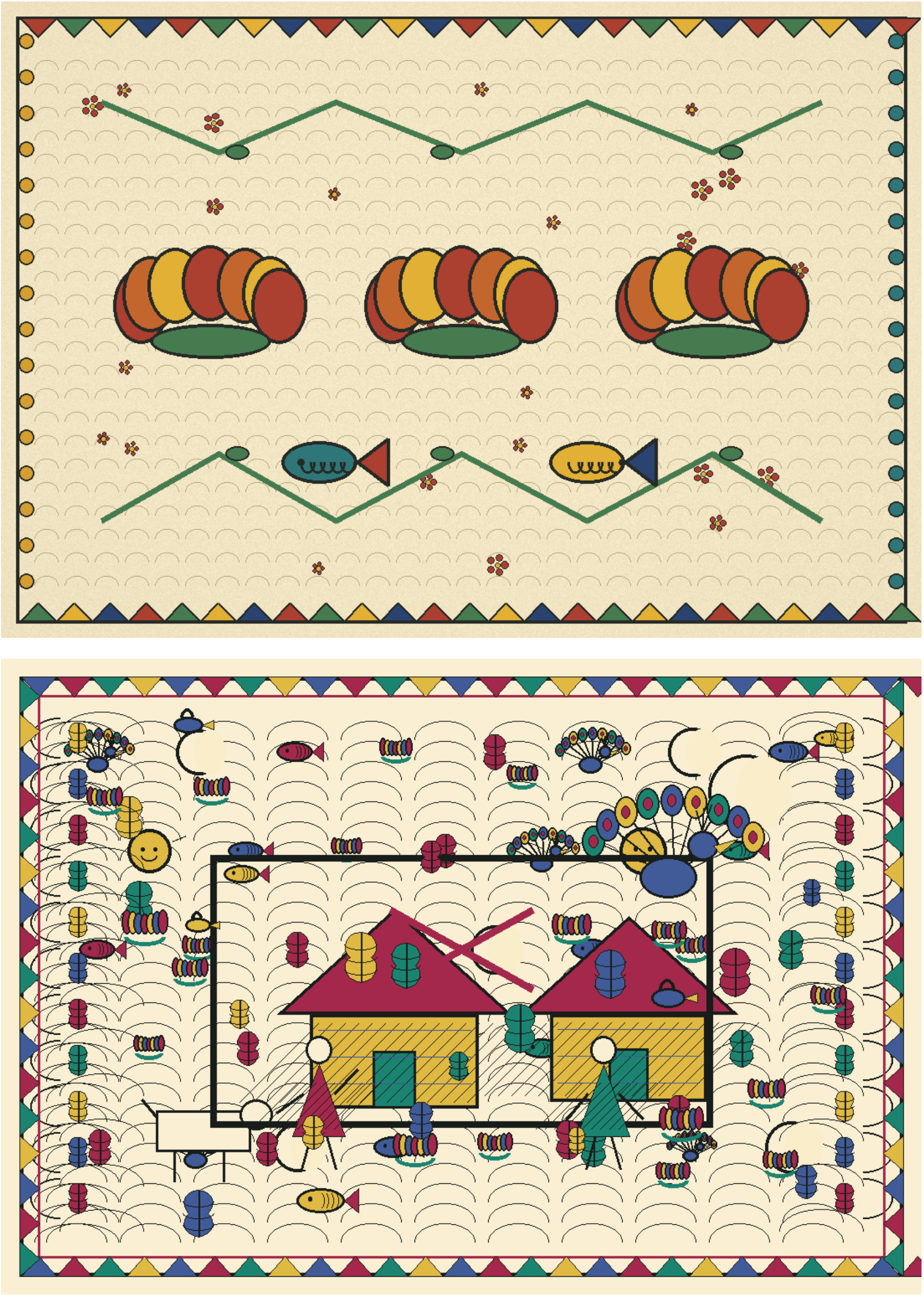

चित्र 4

ई तैयारी छेछनक असाधारण साहस आ आत्मविश्वासक प्रतीक छल — चुनौतीक सामना करबासँ पहिने अपन आत्माकेँ सुदृढ़ करब, शारीरिक आ मानसिक दुनू रूपसँ तैयार होएब।

झुमैत, नशाक प्रभावमे मस्त, मुदा पूर्ण नियन्त्रणमे छेछन डंकापर जोरसँ चोट कऽ देलनि! ई ध्वनि सम्पूर्ण सहिदापुरमे गूँजल — चुनौती स्वीकार भऽ गेल छल, आब पाछाँ हटबाक कोनो प्रश्न नहि छल।

अध्याय ३ : चटियासँ द्वन्द्व

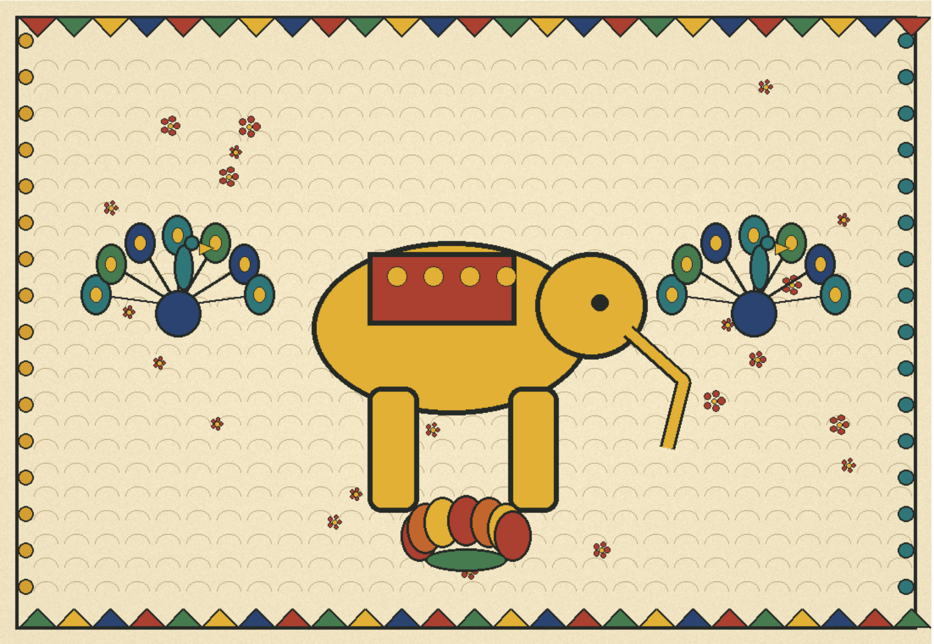

चित्र 5

मानिकचन्द छेछनकेँ देखलनि आ तुरत चटियाकेँ शोर केलनि — युद्धक संकेत। चटिया — भयंकर सुग्गर — दौगि कऽ आयल, अपन शक्तिक प्रदर्शन करैत।

मुदा आश्चर्यजनक रूपसँ, चटिया छेछनकेँ देखि पड़ा गेल! ई प्रतिक्रिया असामान्य छल — शाइत छेछनक तेजस्वी रूप, वा हुनक असाधारण आत्मविश्वास, चटियाकेँ डरा देलक।

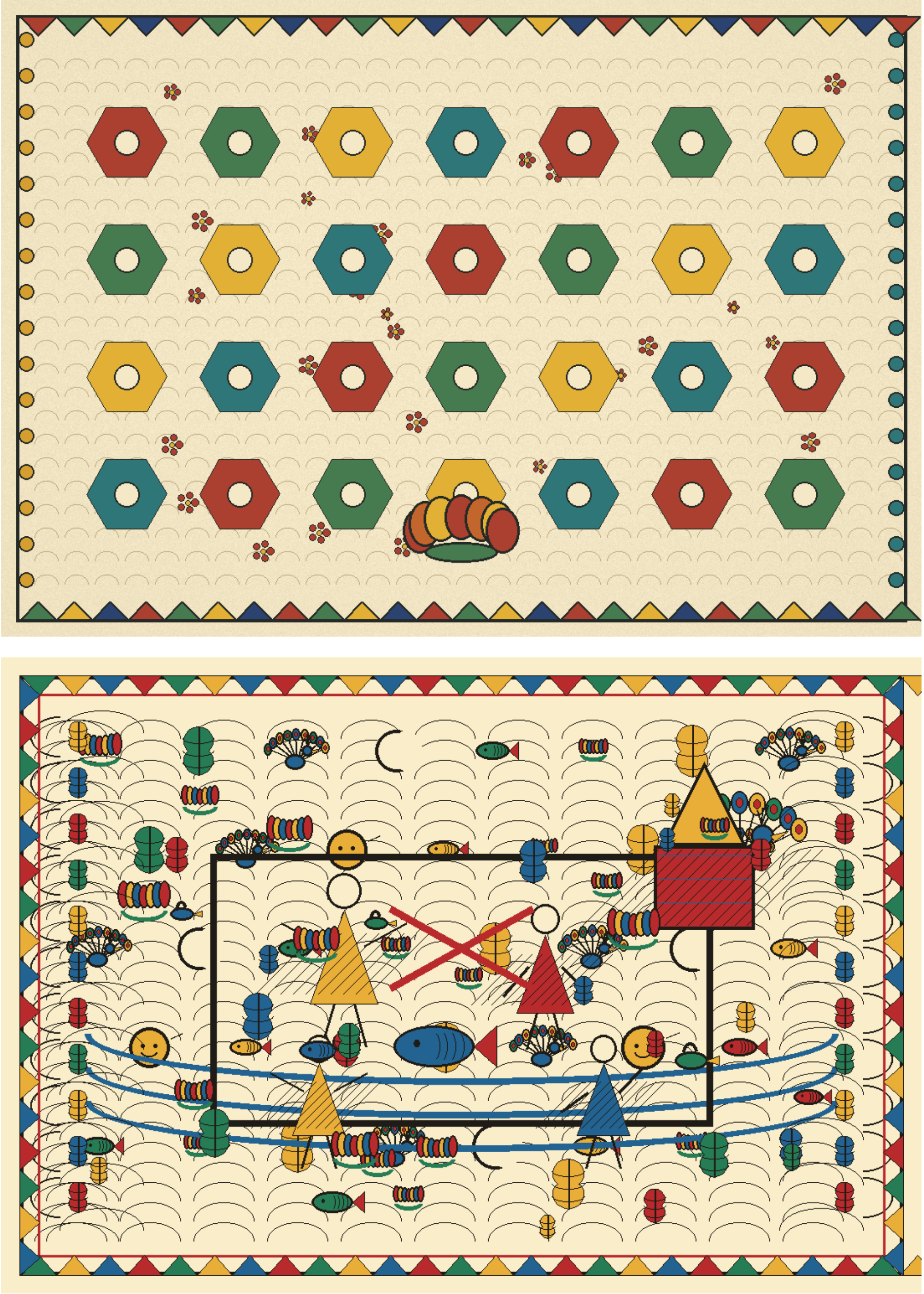

चित्र 6

पनमा आ मानिकचन्द ई देखि चटियाकेँ ललकारा देलनि — अपन पोसुआ पशुकेँ फेर लड़बाक लेल प्रोत्साहित करैत। चटिया दौगि कऽ छेछनपर झपटल — निर्णायक क्षण आबि गेल छल।

मुदा छेछन तैयार छला — ओ चटियाक दुनू पएर पकड़ि चीरि देलनि! ई कार्य अद्भुत बल आ कौशलक प्रदर्शन छल — जकरा आइ धरि कियो हरा नहि सकल छल, ओकरा छेछन एक्के प्रहारमे पराजित कऽ देलनि।

अध्याय ४ : मानिकचन्दसँ दंगल

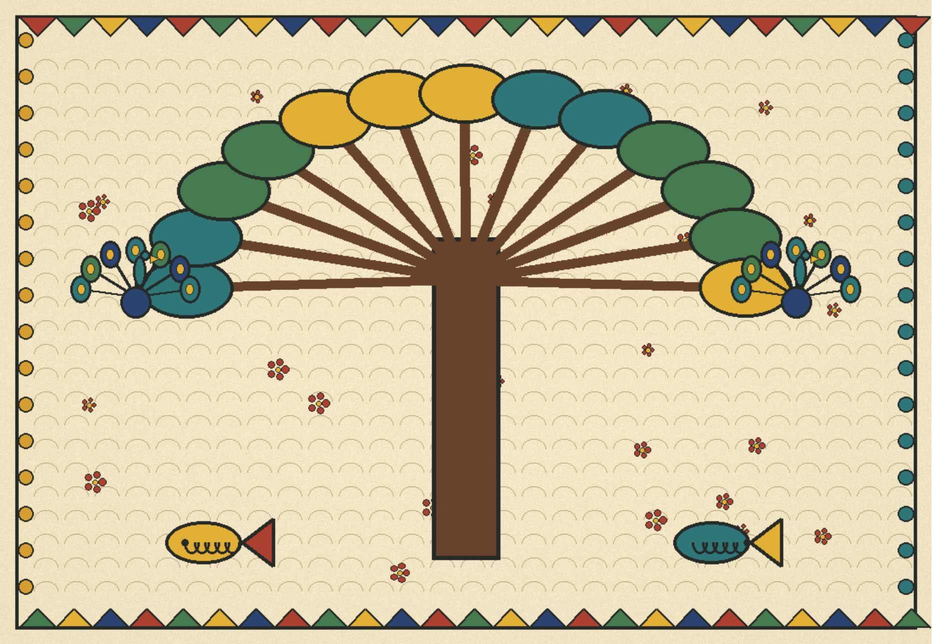

चित्र 7

चटियाक पराजयक बाद, अगिला चरण शुरू भेल — मानिकचन्द स्वयं आब छेछनसँ लड़बाक लेल तैयार भेला, प्रण अनुसार। ई दंगल दुनू शक्तिशाली योद्धाक बीचक निर्णायक मुकाबला छल।

मानिकचन्द आ छेछनमे भयंकर दंगल भेल — बल, कौशल, आ दृढ़ताक टक्कर। दुनू पक्ष अपन-अपन सामर्थ्यक पूर्ण प्रदर्शन करैत, दुनू गोटे जनसमूहक आगाँ एकटा रोमांचक द्वन्द्व प्रस्तुत केलनि।

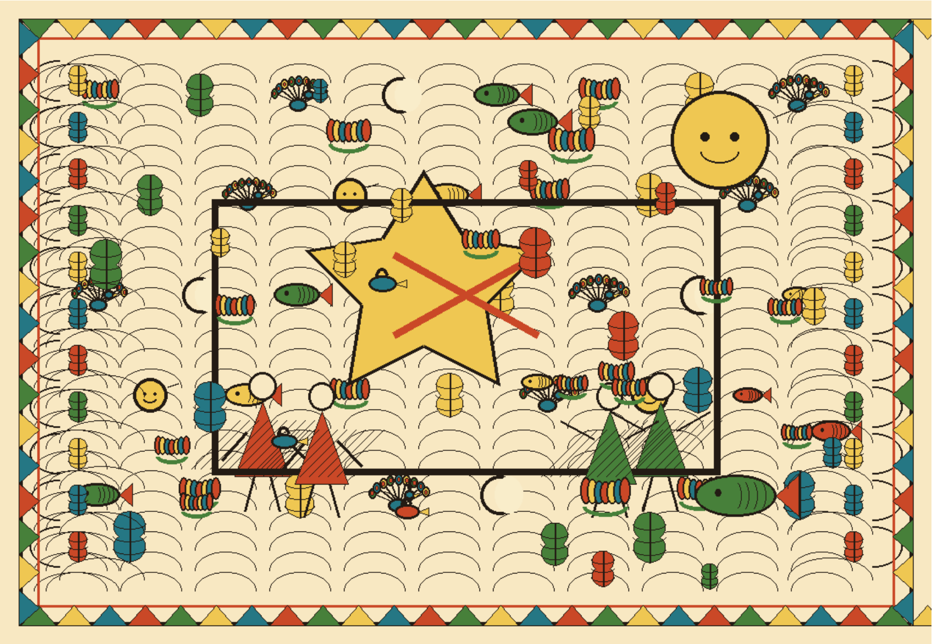

चित्र 8

अन्ततः छेछन विजयी भेला — ओ मानिकचन्दकेँ बजारि देलनि! ई विजय छेछनक बल आ साहसक चरम प्रमाण छल — जे चुनौती आइ धरि कियो पूर्ण नहि कऽ सकल छल, से छेछन सफलतापूर्वक पूर्ण कऽ देलनि।

मानिकचन्द अपन पराजय स्वीकार केलनि, मुदा दुखी नहि भेला — अपितु प्रसन्न भेला! कारण ओकर प्रण पूर्ण भेल, आ एकटा योग्य वीरकेँ अपन बहिनक हाथ सौंपबाक अवसर भेटलनि।

अध्याय ५ : पनमाक विवाह

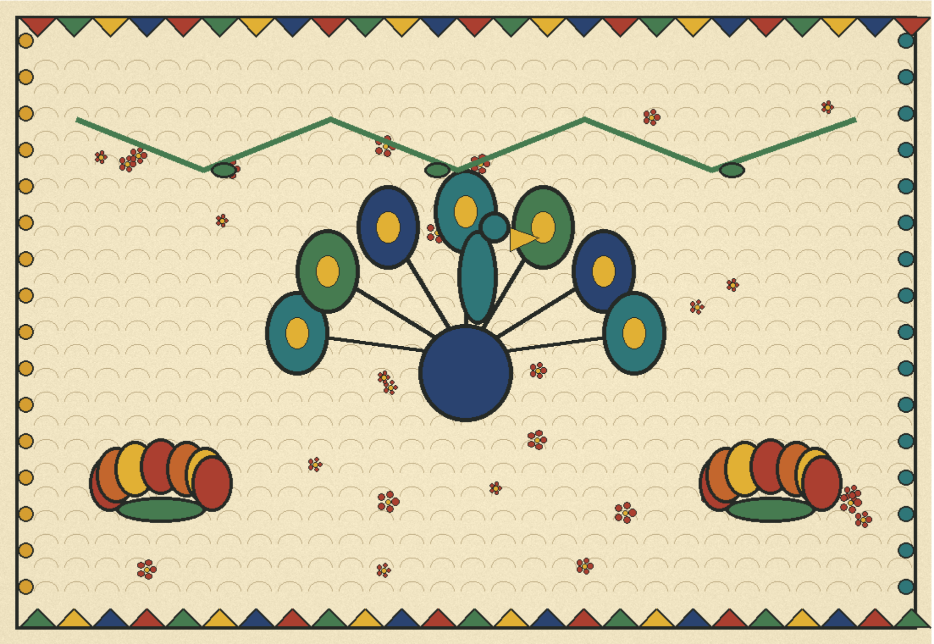

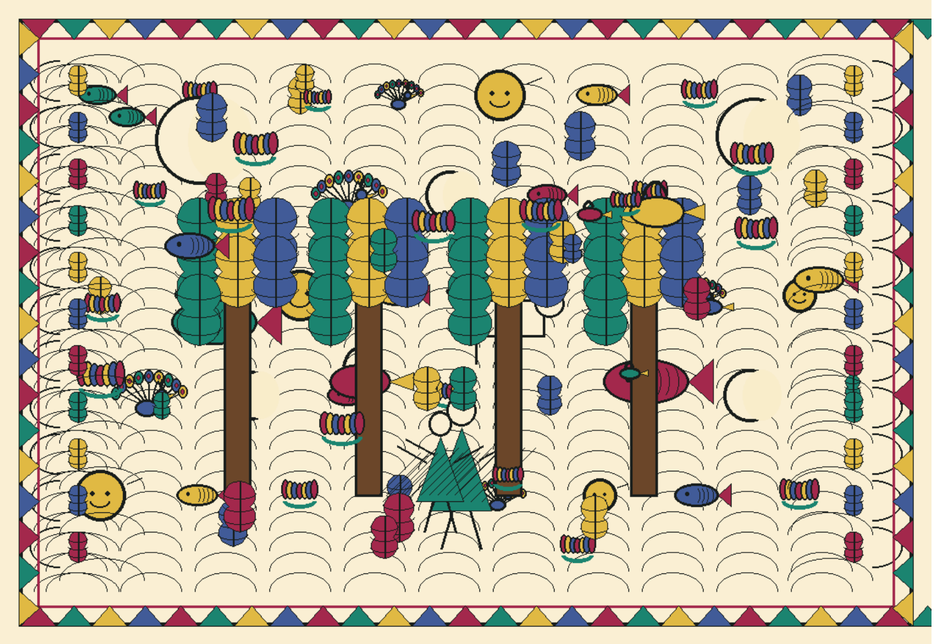

चित्र 9

खुशी-खुशी मानिकचन्द अपन बहिन पनमाक विवाह छेछनक संग करा देलनि — प्रणक अनुसार, आ छेछनक असाधारण वीरताक सम्मानमे। ई विवाह छेछनक बल-विजयक मधुर फल छल।

पनमा आ छेछनक ई मिलन एकटा वीरगाथाक सुखान्त अध्याय छल — शक्ति आ साहसक पुरस्कार प्रेम आ गृहस्थीक रूपमे भेटल। छेछन आब केवल एकटा योद्धा नहि, एकटा गृहस्थ सेहो बनि गेला।

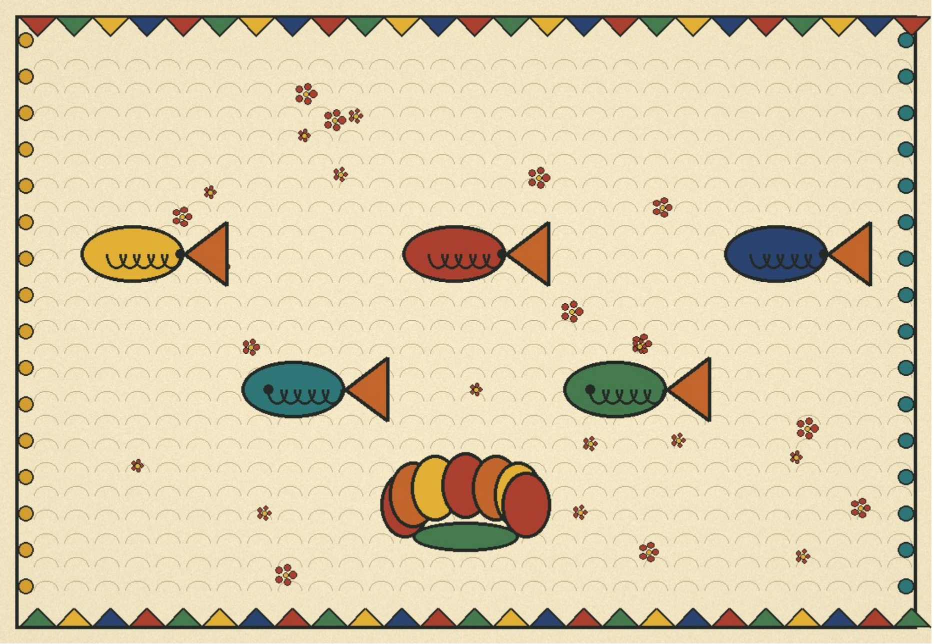

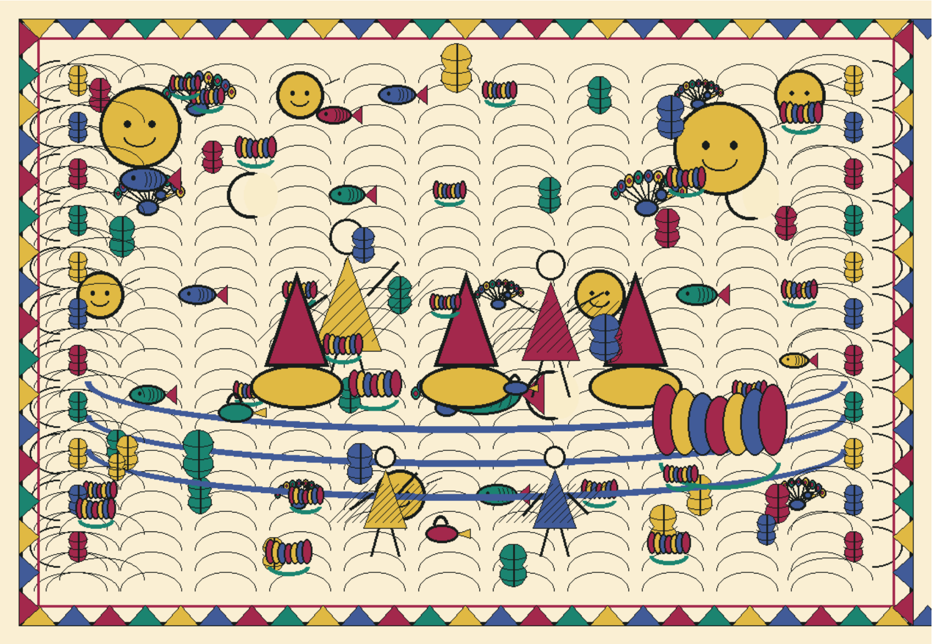

चित्र 10

मानिकचन्द आ छेछनक बीच ई प्रतियोगिता शत्रुतामे नहि बदलल — अपितु सम्मान आ पारिवारिक बन्धनमे परिणत भेल। ई सम्बन्ध डोम समुदायक भीतर वीरता आ सम्मानक परम्परा देखबैत छल।

मुदा गाथा एतय समाप्त नहि होइत अछि— छेछनक जीवनमे आरो एकटा चुनौती प्रतीक्षामे छल, जकर सामना ओकरा अपन नव गृहस्थ जीवनक बीच करए पड़त — एकटा आर शक्तिशाली विरोधीक संग।

अध्याय ६ : कृष्णारामक बसबिट्टी

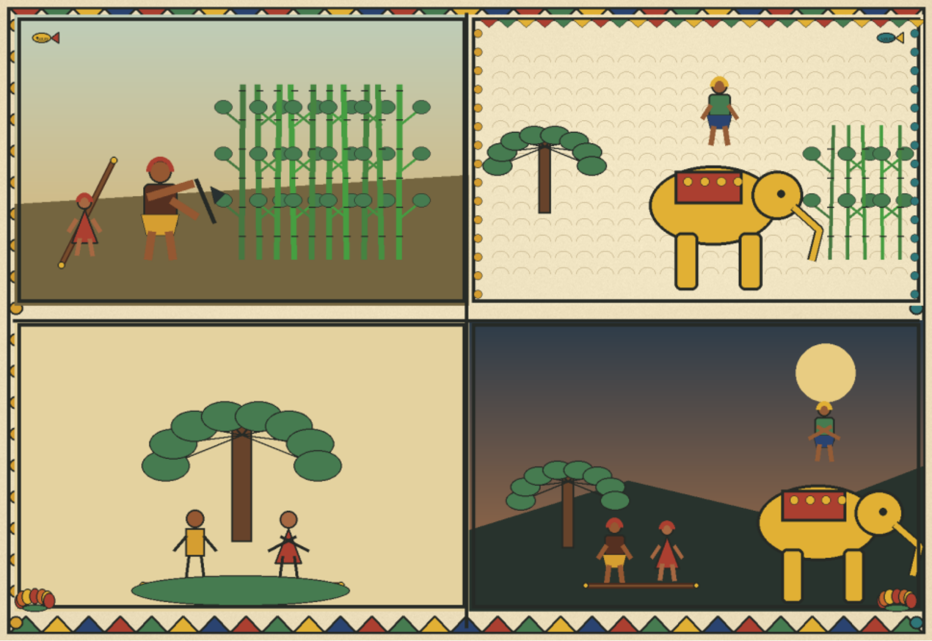

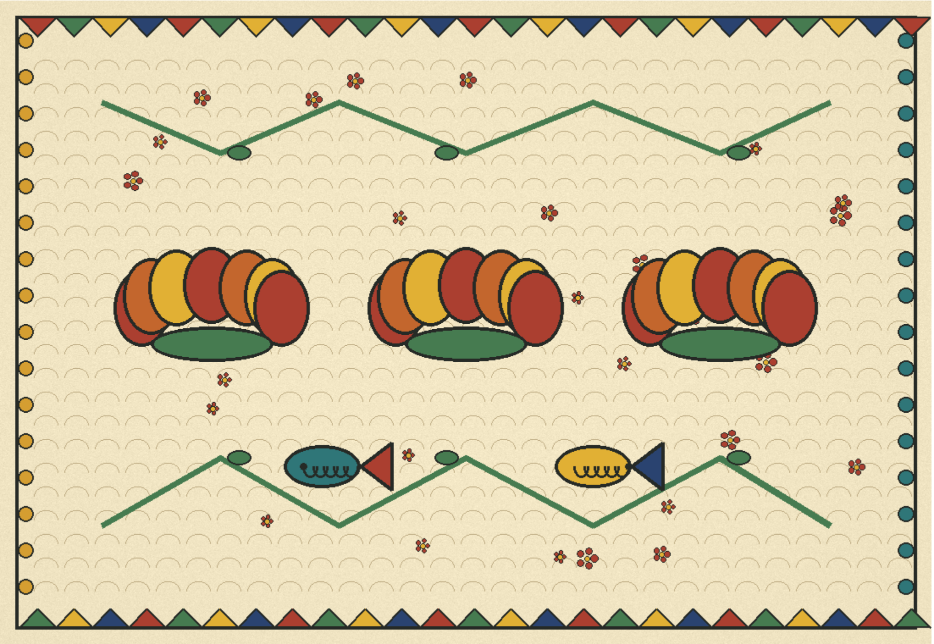

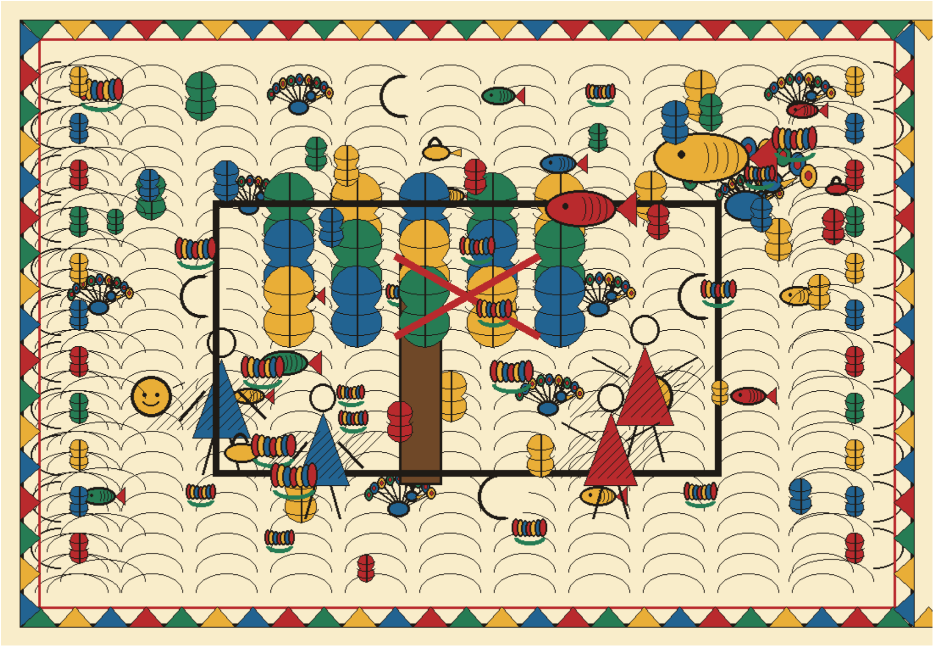

चित्र 11

दिन बितैत गेल। विवाहक बाद छेछन अपन नव जीवन जीबए लगला — मुदा हुनक स्वभाव अखनहुँ साहसी आ निर्भीक छल। ओ दोसराक बसबिट्टीसँ बाँस काटए लगला — शाइत जीविकाक आवश्यकतासँ, वा अपन पुरान आदतिसँ।

एहिना एक बेर छेछन यादवक लोकदेवता कृष्णारामक बसबिट्टीसँ बहुत रास बाँस काटि लेलनि — बिनु अनुमतिक, वा शाइत प्रथागत अधिकारक भ्रममे। ई कार्य आगाँ चलि कऽ एकटा नव द्वन्द्वक कारण बनल।

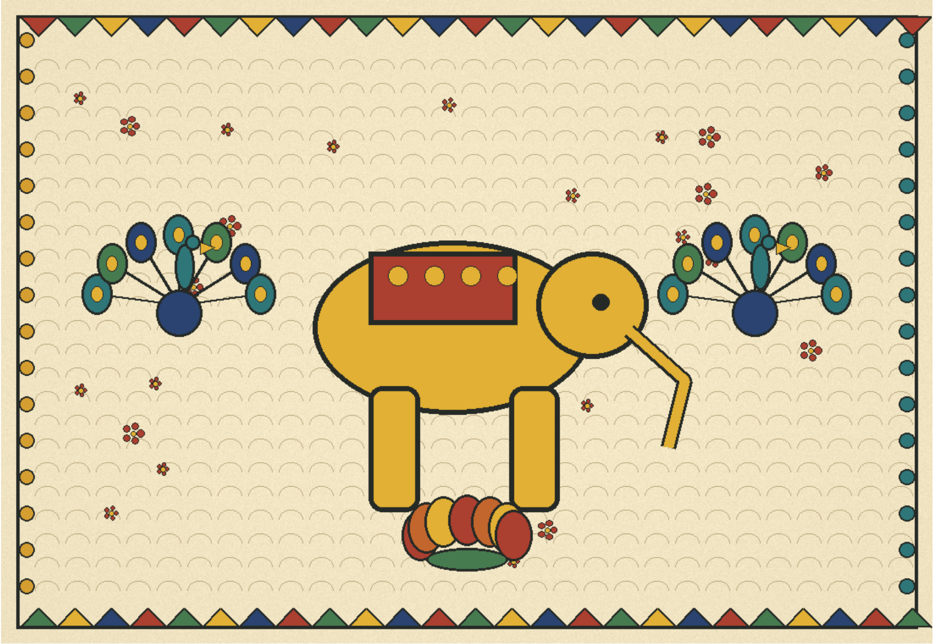

चित्र 12

कृष्णारामकेँ जखन ई पता चललनि, त' ओ क्रुद्ध भऽ अपन सुबरन हाथीपर चढ़ि छेछन लग अएलाह — प्रतिशोध वा स्पष्टीकरणक लेल।

कृष्णाराम छेछनकेँ आमक कलममे पनमा संग सुतल देखलनि — शान्त, निश्चिन्त क्षण, जे अकस्मात् एकटा तनाव भरल मुठभेड़मे बदलए बला छल।

अध्याय ७ : हाथीक शक्ति-प्रदर्शन

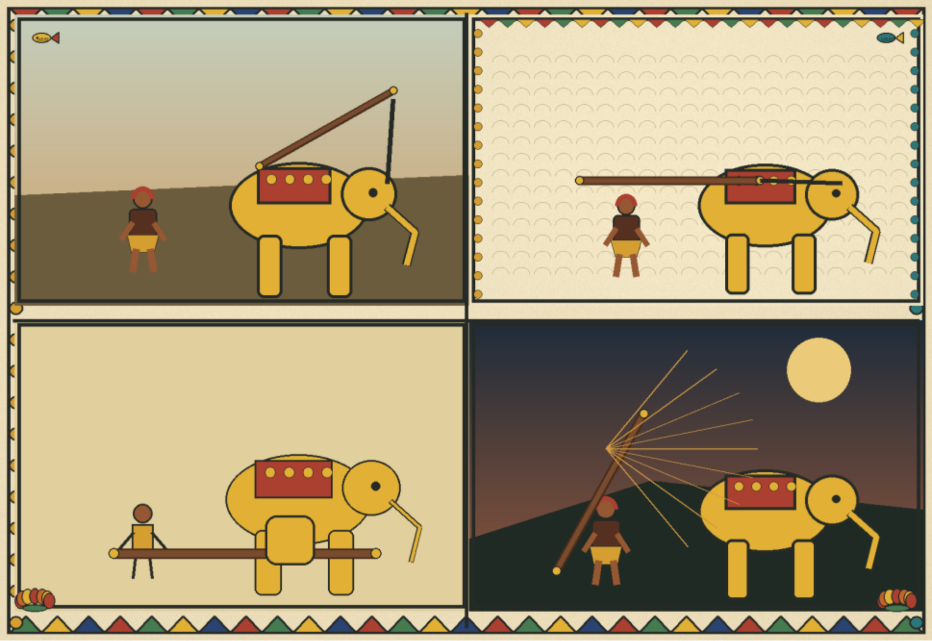

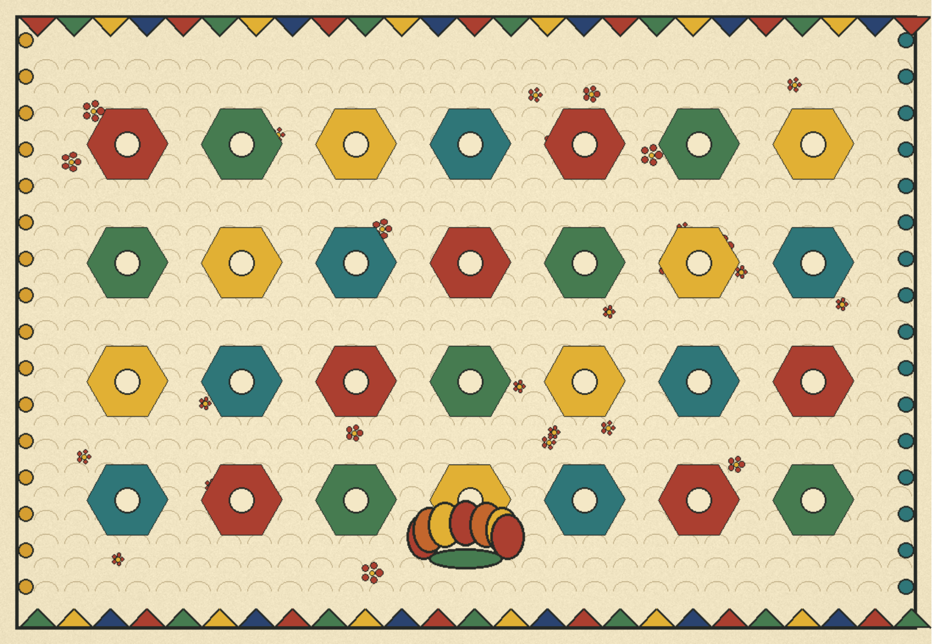

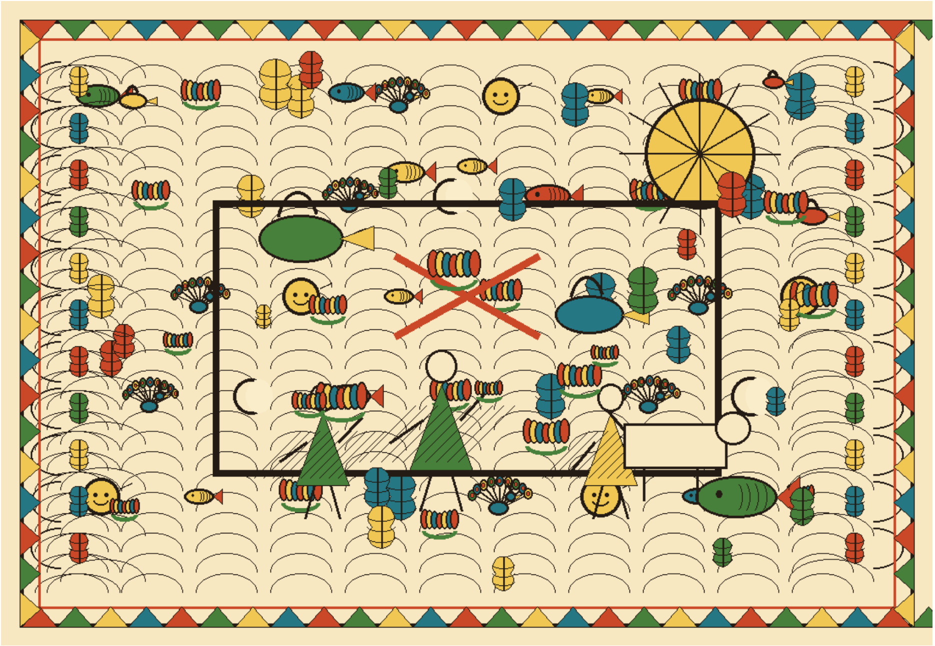

चित्र 13

कृष्णारामक हाथी सुबरन — अत्यन्त शक्तिशाली आ आज्ञाकारी — अपन स्वामीक क्रोधकेँ बुझि तुरत कार्रवाइ केलक। ओ छेछनक पाँच पसेरीक भारी कत्ताकेँ अपन सूढ़सँ उठा लेलक।

सुबरन ऐ भारी कत्ताकेँ छेछनक गरदनिपर राखि देलक — एकटा प्रतीकात्मक आ शारीरिक दुनू रूपसँ शक्तिशाली कार्य, जे छेछनक स्वतन्त्रता आ शक्तिकेँ सीमित करबाक प्रयास छल।

चित्र 14

फेर सुबरन अपन भरिगर पएर ओही कत्तापर राखि देलक — छेछनकेँ पूर्णतः जकड़ैत, हिलब-डुलब असम्भव बनबैत। ई हाथीक अपार शक्तिक प्रदर्शन छल, जकर सामना करब कोनो साधारण मनुष्यक लेल असम्भव जकाँ बुझाइत छल।

ई क्षण छेछनक जीवनक एकटा नव, गम्भीर चुनौतीक आरम्भ छल — जे वीर चटिया आ मानिकचन्द सन शक्तिशाली विरोधीकेँ पराजित केने छला, से आब एकटा हाथीक अपार बलक सोझाँ ठाढ़ छला। गाथा एतय एकटा नव मोड़ लैत अछि, जकर आगाँक विकास मिथिलाक लोक-स्मृतिमे छेछनक अदम्य साहस आ अन्ततः हुनक विजयी संघर्षक रूपमे सुरक्षित अछि — एकटा एहन वीर, जे बाँसक बजारसँ लऽ कऽ हाथीक शक्ति-प्रदर्शन धरि, सभ चुनौतीक सामना अपन अदम्य साहससँ केलनि।

समाप्त

VIDEHA

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका | ISSN 2229-547X | www.videha.co.in